वह लाश
किसकी थी?
साग्नि 'पाठक'
SAgni 'Pathak'

वो लाश किसकी थी

(क्राइम मिस्ट्री)

साग्नि पाठक

वो लाश किसकी थी

(क्राइम मिस्ट्री)

लेखक : साग्नि पाठक

प्रकाशक : उत्पला ग्राफिक्स

सर्वाधिकार : साग्नि पाठक

मूल्य : २०० रुपये मात्र

इस उपन्यास की सभी घटनायें काल्पनिक हैं। किसी भी घटना या चरित्र से किसी तरह का साम्य संयोग मात्र हो सकता है।

उपन्यास का उद्देश्य केवल मनोरंजन है, किसी व्यक्ति, वर्ग या जाति पर किसी प्रकार का आक्षेप करना नहीं।

उपन्यास या उपन्यास के किसी भी अंश का उपयोग उद्धरण देने के अतिरिक्त लेखक/प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी माध्यम से प्रकाशित, प्रसारित, या वितरित करना निषिद्ध है।

—१—

देवनगढ़।

भारत की राजधानी दिल्ली से लगभग ३०० किलोमीटर दक्षिण—पूर्व में स्थित, उत्तर प्रदेश का एक नया बना जिला।

शहर के नाम पर एक बड़ा कस्बा कहा जा सकता है जिसे। जब की यह घटना है, तब तक आधुनिकता देवनगढ़ में पैर तो नहीं पसार पाई थी पर दस्तक देना पूरे जोश—ओ—खरोश से शुरू कर चुकी थी।

देवनगढ़ का जिला बनना कोई ऐतिहासिक घटना नहीं थी, थी तो बस क्षेत्र के वोट खरीदने की एक नामाकूल सी राजनैतिक कोशिश। बहरहाल, उस विवाद से हमारी कहानी का कोई वास्ता नहीं है।

हमारी कहानी शुरू होती है २०१५ से।

जून का तीसरा सप्ताह था— १८ जून।

दोपहर दो—तीन के बीच का समय।

मानसून का अभी दूर—दूर तक कोई अता—पता नहीं था। लिहाजा आप खुद कल्पना कर सकते हैं कि आसमान से किस तरह आग बरस रही होगी उस समय।

सड़कें सूनी पड़ी हुई थीं।

एक लड़की हल्के हरे रंग की ऐक्टिवा से चली आ रही थी। सफेद चूड़ीदार पैजामा, चुस्त हरा छींटदार कुर्ता जिसकी बाहें कुहनी से कुछ अंगुल नीचे तक आ रही थीं। सफेद चुन्नी उसने चेहरे के चारों ओर इस तरह से लपेटी हुई थी कि बस आँखें भर दिख रही थीं। इधर कुछ सालों से देवनगढ़ की लड़कियों में भी गर्मियों में यह फैशन चल निकला था। चेहरा ढका होने से उसकी उम्र का अंदाजा लगा पाना तो संभव नहीं था पर देहयष्टि बता रही थी कि जवान है और मजबूत है। आम लड़कियों से कद में ऊँची ही है।

अचानक एक काली मारुति वैन ने उसे ओवरटेक किया। ओवरटेक करने के साथ ही वैन बाईं ओर झोंका खाती हुई एकदम से रुक गई। लड़की की स्कूटी बस वैन से लड़ते—लड़ते बची।

वैन के रुकते ही दो मजबूत कद—काठी के व्यक्ति झटके से नीचे उतरे और हक्की—बक्की खड़ी लड़की की ओर झपटे। दोनों ने ही नीली फेडेड जींस पहनी हुई थी। ऊपर एक की टीशर्ट नीली लाइनदार थी जबकि दूसरे की हल्की पीले रंग की। दोनों ने ही अपने चेहरे सफेद अँगौछे से छुपाये हुए थे।

लड़की जब तक कुछ समझती, वैन की बैकसीट का पैसेंजर दूसरी साइड के गेट से उतरकर उसके सर पर आ गया। वैन का स्कूटी के साइड वाला दरवाजा स्कूटी से ब्लॉक हो रखा था। लड़की ने झटके से स्कूटी के आगे वाले हुक से टँगा अपना हैण्डबैग कब्जे में किया और दूसरी ओर से उतरते हुए स्कूटी आगंतुक पर धकेल दी। फिर भी लड़की का भागने का यह प्रयास सफल नहीं हो सका क्योंकि उसके स्कूटी से उतरते—उतरते ही वैन की ड्राइविंग सीट से उतरा आदमी भी दौड़ता हुआ उसके पीछे आ गया था। उस आदमी ने लड़की को पीठ की तरफ से कब्जे में ले लिया। लड़की ने एक जोरदार चीख मारी। पीछे वाले आदमी ने अपनी एक बाँह उसकी बाँह के ऊपर से लेते हुए उसके गिर्द लपेट दी। उसी क्रम में दूसरी बाँह उसके कंधे पर से गुजारते हुए अपनी हथेली उसके मुँह पर जमा दी। लड़की की अगली चीख उसके गले में ही घुट कर रह गई। वह अपने को छुटाने के लिए फड़फड़ाने लगी। इस प्रयास में वह एक तरह से आदमी के हाथों में लटक गई। उसकी एक हथेली अपने मुँह पर जमे आदमी के हाथ से जूझ रही थी और दूसरी छाती के ठीक नीचे से उसके बदन को दबोचे उसके हाथ से। पर आदमी की पकड़ मजबूत थी, न तो लड़की के मुँह पर से उसकी पकड़ कमजोर पड़ी और न ही कमर से। लड़की बस उसके हाथों में झूल कर रह गई।

इस बीच वैन की पीछे वाली सीट से उतरे आदमी ने, जिस पर लड़की ने स्कूटी धकेल दी थी, स्कूटी को खींच कर साइड में स्टैंड के सहारे टिका दिया और लपककर लड़की के पैर कब्जे में कर लिये। अब लड़की दोनों आदमियों के हाथों में झूल रही थी। पैर पकड़े आदमी पैर थामे—थामे सीधा वैन के गेट से अन्दर समा गया। पीठ की ओर से लड़की को थामे आदमी ने भी पीछे से उसे भीतर धकेल दिया। जैसे ही लड़की भीतर हुई उसने बिना एक सेकेंड की देरी किए खींचकर गेट बन्द किया और आगे ड्राइविंग सीट की ओर दौड़ पड़ा।

मुँह पर से आदमी का हाथ हटते ही लड़की की एक और चीख हवा में गूँज उठी। पीछे करीब पचास मीटर दूर खड़े एक गन्ने के रस के ठेले पर से एक आदमी इस बीच हँसिया लिए चिल्लाता हुआ उनकी ओर दौड़ रहा था, पर वह बहुत दूर था। वह अभी कम से कम पन्द्रह—बीस कदम पीछे ही रहा होगा कि वैन स्टार्ट हुई और हवा हो गई।

सड़क पर फिर सन्नाटा छा गया।

यह एक सिंगल रोड थी, हालांकि पर्याप्त चौड़ी थी। हकीकत में तो अभी तक देवनगढ़ में कोई भी टू—लेन रोड नहीं थी। जहाँ पर यह घटना घटी वह शहर के बाजार से दूर शहर का बाहरी इलाका था। सड़क आगे रानी का तालाब की ओर जाती थी, जो शहर के अमीरों का रिहाइशी इलाका था। जहाँ पर घटना घटी उससे कोई सौ मीटर पीछे शहर का सबसे मशहूर और सबसे ज्यादा स्ट्रेंथ वाला कॉलेज था—किंग्स इंटर कॉलेज। जून का महीना था, कॉलेज में अभी छुट्टियाँ चल रही थीं। अगर छुट्टियों के अलावा कोई और दिन होते तो सड़क पर ऐसा सन्नाटा पसरा नहीं होता। कॉलेज के दिनों में सड़क पर लड़कों की आवाजाही बनी ही रहती थी। इंटर तक आते—आते ऐसे फैक्ट्रीनुमा कॉलेजों के लड़कों पर अनुशासन जैसी बंदिशें अपने आप ढीली हो जाती हैं ... लड़के खुद ही कर लेते हैं। तब कॉलेज के आसपास की

तीन किताबों और स्टेशनरी की दुकानें भी खुली होती थीं। कई ठेलेवाले भी अपने ठेले लिए टहला करते थे।

पर आज ऐसा नहीं था। भट्टी ऐसा तपता दिन और बंद कॉलेज, मुकम्मल सन्नाटा था सड़क पर। आदमी के नाम पर बस दो आदमी थे, घटनास्थल से करीब पचास मीटर पीछे। वे थे, पहला तो एक गन्ने के रस वाला, जो लड़की की चीख सुनकर वैन की ओर दौड़ा था। वहाँ एक पेड़ के नीचे गर्मियों का उसका स्थाई अड्डा था; और दूसरा एक अधेड़ आदमी जो वहाँ खड़ा रस पी रहा था। उसकी साइकिल उसकी बगल में खड़ी हुई थी।

रस पी रहे रहे आदमी की नजर घटनास्थल की ओर ही थी। जैसे ही वैन से उतरे आदमियों ने लड़की पर हमला किया, उसका ग्लास थामे हाथ काँप गया। रस छलक गया। अभी तक वह खड़ा हुआ था, अचानक वहीं पड़ी बेंच पर बैठ गया।

''वो ... वो ... वो ...'' उसके मुँह से हकलाती हुई बस इतनी सी ही आवाज निकली, साथ ही उसका दूसरा हाथ अपने आप घट रही घटना की ओर उठ गया।

उसकी हरकत से हड़बड़ाकर रस वाले ने भी उधर ही निगाह घुमाकर देखा। उसके देखते ही लड़की की पहली चीख हवा में गूँजी। उसने चीख सुनते ही वहीं ठेले पर छिले हुए गन्नों के नीचे दबा गन्ना छीलने वाला हँसिया खींचा और वैन की ओर दौड़ पड़ा। वह मुश्किल से बीस कदम दौड़ पाया होगा कि लड़की की दूसरी चीख उसे सुनाई पड़ी। उसने भी जवाब में ललकारा और अपनी दौड़ने की गति और तेज कर दी। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसके देखते ही देखते लड़की को पीछे से धकेलने वाला आदमी वैन का दरवाजा बन्द करता हुआ आगे भागा और चक्कर काटकर ड्राइविंग सीट पर सवार हो गया। रस वाला वैन तक पहुँच पाता उससे पहले ही वैन फुर्र हो गई। रस वाला पीछे से गालियाँ बकता, ललकारता रह गया।

फिर भी उसने वैन का नम्बर पढ़ लिया था— 'यू.पी.—४७ के ५२६२'

वह मन ही मन नम्बर दोहराता हुआ वापस आया और झट से उधारी लिखने वाली कॉपी के आखिरी पन्ने पर उसे नोट करके पन्ना फाड़ लिया।

''कितना बुरा जमाना आ गया। घर की औरतें—लड़कियाँ दिन में भी सेफ नहीं हैं।'' वह जब तक नम्बर नोट कर रहा था, उसका ग्राहक बोला। वैन चली गई थी और उसके जाने के साथ ही उसके होश भी वापस आ गए थे। वह भी आम हिन्दुस्तानी की तरह साँप निकल जाने के बाद लकीर पीट रहा था। जमाने को और व्यवस्था को कोसने की अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा रहा था।

''मोबाइल है?'' रस वाले ने उसके कमेंट पर कोई प्रतिक्रिया दिये बिना उससे सवाल किया।

''नहीं, पर क्यों?'' ग्राहक ने ताज्जुब से पूछा।

रस वाले ने इस सवाल पर भी ध्यान दिए बिना पूछा—

''तुम तो शहर की तरफ ही जा रहे हो?''

ग्राहक ने सहमति में सिर हिला दिया।

''ये लो वैन का नम्बर ... वो चौराहे पर पीसीओ से १०० नम्बर पे फोन कर देना।''